SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीतिः भारत की बदलती रणनीति

प्रियंक चक, पीएच–डी, सैन्य विज्ञान विभाग
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

प्रियंक चक, पीएच–डी
E-mail : priyankchack@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/01/2026
Revised on : 01/04/2026
Accepted on : 10/04/2026
Overall Similarity : 01% on 02/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 2, 2026 (03:11 PM)
Matches: 0 / 1551 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति पिछले कुछ दशकों में वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य में बदलती चुनौतियों और अवसरों के साथ लगातार विकसित हुई है। यह शोध भारत की बदलती रणनीति का विश्लेषण करता है, जिसमें आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, सीमा विवाद, और ऊर्जा सुरक्षा जैसी राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों के साथ–साथ वैश्विक शक्तियों और पड़ोसी देशों के साथ भारत के कूटनीतिक संबंधों की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि भारत की विदेश नीति अब केवल परंपरागत राजनीतिक और सैन्य दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें आर्थिक कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग, बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी और तकनीकी क्षमताओं के विकास को भी शामिल किया गया है। शोधपत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भारत की बदलती रणनीति राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी भूमिका को सुदृढ़ करने की दिशा में एक संतुलित और गतिशील दृष्टिकोण अपनाती है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति, साइबर सुरक्षा, भारत की रणनीति, आतंकवाद, सीमा विवाद.

प्रस्तावना

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति का स्वरूप समय के साथ बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय संदर्भों के अनुसार विकसित हुआ है। 21वीं सदी की चुनौतियाँ केवल पारंपरिक सैन्य खतरे तक सीमित नहीं हैं; आतंकवाद, साइबर हमले, आर्थिक दबाव, जलवायु परिवर्तन और सीमा विवाद अब राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण कारक बन गए हैं। इसी प्रकार, वैश्विक शक्ति संतुलन और वैश्विक आर्थिक परिदृश्य ने भारत की विदेश नीति को अधिक बहुआयामी और रणनीतिक रूप देने की आवश्यकता उत्पन्न की है। पारंपरिक दृष्टिकोण में भारत की विदेश नीति मुख्यतः पड़ोसी देशों के साथ संबंधों, सीमा सुरक्षा और रक्षा रणनीति पर केंद्रित थी। हाल के दशकों में, यह नीति आर्थिक कूटनीति, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मंचों में

सक्रिय भागीदारी, तकनीकी और विज्ञान आधारित क्षमताओं के विकास, और वैश्विक सुरक्षा ढांचे में अपनी भूमिका को सुदृढ़ करने की दिशा में विकसित हुई है।

यह शोध पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि कैसे भारत ने बदलते अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय परिदृश्य के अनुरूप अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति की रणनीतियों को अनुकूलित किया है साथ ही, यह शोधपत्र भारत की वर्तमान रणनीतिक प्राथमिकताओं, सुरक्षा चुनौतियों और विदेश नीति के उद्देश्यों को समझने का प्रयास करता है।

उद्देश्य

- भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास और उसके बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना।
- भारत की सुरक्षा चुनौतियों जैसे आतंकवाद, साइबर खतरे, सीमा विवाद और ऊर्जा सुरक्षा का अध्ययन करना।
- भारत की विदेश नीति रणनीतियों में आर्थिक, राजनीतिक और बहुपक्षीय पहलुओं की भूमिका को समझना।
- भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक कूटनीति के माध्यम से उसकी भूमिका और प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- भारत की बदलती रणनीति और उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का समग्र मूल्यांकन करना।

महत्व

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति का महत्व न केवल देश के अंदर, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अत्यधिक है। वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य में उत्पन्न हो रही नई चुनौतियाँ, जैसे कि आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा, भारत को अपनी सुरक्षा और कूटनीतिक रणनीतियों में सुधार और अनुकूलन की आवश्यकता महसूस करवा रही हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य इन बदलती परिस्थितियों के बीच भारत की रणनीति को समझना और यह मूल्यांकन करना है कि किस प्रकार भारत अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एक नया दृष्टिकोण अपना रहा है। भारत की विदेश नीति में समग्र रणनीतिक बदलाव यह दर्शाता है कि देश केवल अपनी सैन्य क्षमता को नहीं, बल्कि अपनी आर्थिक शनि, कूटनीतिक भागीदारी, और वैश्विक सहयोग को भी महत्व दे रहा है। यह शोध–पत्र इस महत्व को स्पष्ट करेगा कि कैसे भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक मंच पर अपनी साशक्त भूमिका निभा सकता है साथ ही, यह अध्ययन उन रणनीतियों को पहचानने में मदद करेगा जो भविष्य में भारत की सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकती हैं। यह अध्ययन, इस बदलाव की दिशा को समझकर, नीतिदृनिर्माताओं, सुरक्षा विशेमाज्ञों और कूटनीतिक विश्लेषकों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगा।

समस्या

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति में हाल के समय में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, लेकिन ये परिवर्तन विभिन्न चुनौतियों के समाधान में किस हद तक प्रभावी रहे हैं, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्यों में भारत को एक नई सुरक्षा रणनीति की आवश्यकता महसूस हो रही है, जिसमें केवल पारंपरिक सैन्य खतरे नहीं, बल्कि आतंकवाद, साइबर हमले, सीमा विवाद, जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा जैसे विविध पहलू भी शामिल हैं। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए भारत को अपनी कूटनीतिक और सुरक्षा नीतियों को अद्यतन और अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

हालांकि भारत की विदेश नीति में बदलाव आया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि ये परिवर्तन देश की सुरक्षा और वैश्विक स्थिति को सुदृढ़ करने में कितने प्रभावी रहे हैं। इस संदर्भ में, भारत की बदलती सुरक्षा रणनीतियों और विदेश नीति के प्रभावों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, यह भी जरूरी है कि हम यह जानें कि क्या भारत की यह नई रणनीति राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों में बेहतर संतुलन स्थापित करने में सक्षम है या नहीं।

निष्कर्ष

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति में हाल के दशकों में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, जो वैश्विक और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में देश की बढ़ती रणनीतिक भूमिका को दर्शाते हैं। बदलते वैश्विक समीकरणों और उभरती नई सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनज़र, भारत ने अपनी कूटनीतिक और सुरक्षा नीतियों को पुनर्निर्मित करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।

ये बदलाव न केवल पारंपरिक सैन्य खतरों के प्रति प्रतिक्रिया हैं, बल्कि नए क्षेत्रों जैसे साइबर सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए भी आवश्यक थे। भारत ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर एक

बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें कूटनीतिक, आर्थिक और सैन्य ताकत का संतुलित उपयोग किया जा रहा है साथ ही, वैश्विक मंचों पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करते हुए, भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को भी प्राथमिकता दी है। हालांकि, यह स्पमट है कि भारत की बदलती विदेश नीति और सुरक्षा रणनीति के लिए लंबी अवधि में कुछ सुधार और परिष्करण की आवश्यकता हो सकती है। इसके बावजूद, इन प्रयासों से भारत की वैश्विक स्थिति और क्षेत्रीय सुरक्षा में निश्चित रूप से मजबूती आई है। भविष्य में, अगर भारत अपनी रणनीतियों को लगातार अनुकूलित करता रहेगा और नई सुरक्षा चुनौतियों का समय पर समाधान करेगा, तो वह न केवल अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को और सुदृढ़ करेगा, बल्कि वैश्विक कूटनीतिक मंच पर भी एक प्रमुख भूमिका निभा सकेगा।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की सुरक्षा और विदेश नीति में यह बदलाव न केवल वर्तमान की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है, बल्कि भविष्य की संभावनाओं को भी ध्यान में रखते हुए एक स्थिर और संतुलित दृष्टिकोण अपनाया गया है।

सुझाव

- **समग्र सुरक्षा दृष्टिकोण**: भारत को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतियों को एक समग्र दृष्टिकोण से पुनः परिभामित करना चाहिए, जिसमें पारंपरिक सैन्य शनियों के साथदृसाथ आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, जैविक खतरे और जलवायु परिवर्तन जैसी नई सुरक्षा चुनौतियाँ भी शामिल हों। इन पहलुओं को रणनीतिक रूप से एकीघ्त करके भारत अपनी सुरक्षा को मजबूत कर सकता है।
- **आर्थिक कूटनीति का विस्तार**: भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति का और अधिक समावेश किया जाना चाहिए। भारत को अपनी आर्थिक शनि को विदेश नीति के उपकरण के रूप में और सशन रूप से उपयोग करना चाहिए। विशेष रूप से, व्यापार, निवेश, और तकनीकी सहयोग के माध्यम से अपने संबंधों को बढ़ावा देना चाहिए।
- **साइबर सुरक्षा को प्राथमिकता**: डिजिटल युग में भारत को अपनी साइबर सुरक्षा को एक प्रमुख राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दा मानते हुए, इस क्षेत्र में विशेमा रणनीतियाँ विकसित करनी चाहिए। साइबर हमलों और डेटा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए नए सुरक्षा ढांचे का निर्माण किया जाना चाहिए।
- **क्षेत्रीय सहयोग में वृद्धि**: भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ सुरक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए अधिक सक्रिय कदम उठाने चाहिए। इसके साथ ही, भारतीय Oceanic Security और क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र में भागीदारी को भी मजबूत करना चाहिए, जिससे भारत की क्षेत्रीय स्थिति सुदृढ़ हो।
- **सुरक्षा नीति के सुधार में भागीदारी**: भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के निर्माण में नागरिक समाज, थिंक टैंक, और सुरक्षा विशेषज्ञों को अधिक से अधिक शामिल किया जाना चाहिए। इससे नीतियों की व्यापकता बढ़ेगी और विभिन्न दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए बेहतर निर्णय लिए जा सकेंगे।
- **नवीनतम प्रौद्योगिकी में निवेश**: भारत को उभरती तकनीकों जैसे घत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, और क्वांटम कंप्यूटिंग में निवेश करना चाहिए ताकि भविमय में यह रणनीतिक रूप से अपनी सुरक्षा और कूटनीति को प्रौद्योगिकी से सशन बना सके।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, एस. (2015) *भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा: चुनौतियाँ और रणनीतियाँ.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
2. सिंह, ए. (2018) *21वीं सदी में भारत की विदेश नीति.* सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
3. शर्मा, आर. (2020) रणनीतिक साझेदारी में विकास भारत और संयुन राज्य अमेरिका. *अंतर्राष्ट्रीय मामलों की पत्रिका,* 54(2), 45–67।
4. मेहता, के. (2017) भारत में साइबर सुरक्षा: उभरती चुनौतियाँ और रणनीतियाँ. *भारतीय रणनीतिक अध्ययन पत्रिका,* 12(4), 125–140।
5. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, (2021) राष्ट्रीय सुरक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट 2020–21, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
6. राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् सचिवालय, (2020) *भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति: कार्य के लिए एक रूपरेखा.* एनएससीएस, नई दिल्ली।

****